शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएं

छोटे समूहों की अगुवाई करना
अध्याय 3: व्यस्कों को सिखाना

छोटा समूह किसी भी व्यक्ति को धनिष्ठ,सक्रिय, मसीही परिवार का अनुभव करने का अनुभव प्रदान करना है। जब समूह में भिन्न आयु के लोग पाये जाते हों, तब हमारे जीवन के बीते अनुभव व बुद्धि की बातें समूह के सदस्यों को फायदा पहुंचा सकती हैं। हालाकि बहुत से अगुवों को समूह में अपने से पुराने लागों पर अधिकारी ठहराया जाना सहज लग सकता है। एक अगुवा किस प्रकार से आदर व उचित ढंग से अपने छोटे समूह के अन्य व्यस्क लोगों का मार्गदर्शन कर सकता है।

कुछ ऐसे चारित्रिक गुण हैं जिसकी बाइबल सभी विश्वासियों से उम्मीद करती हैः नम्रता, तरस खाना, सज्जनता आदि। शिक्षक व अगुवे को परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा करने तथा रिक्त स्थानों को पूरा करने के लिए उन विशेष गुणों की आवश्यकता होती है।

मसीह के द्वारा प्रदान किये गये अधिकार का हिम्मत के साथ इस्तेमाल करें(जिसे कलीसिया ने आपके भीतर देखा हो)। यदि परमेश्वर ने आपको इस काम के लिए बुलाया है, तो लोगों के सामने परमेश्वर की सामर्थ में होकर उस अधिकार में खड़े होने से बिल्कुल न डरें।

"स्थिति" या "अनुभव" की परवाह न करते हुए, जैसा वचन में बताया गया है सभी उम्र के लोगों के साथ आदर के साथ व्यवहार करें। चाहें आप अपने समूह के किसी बुजुर्ग व्यक्ति की तुलना में कितने भी पढ़े या प्रशिक्षित हो मगर आप उनके साथ हमेशा आदर के साथ बातचीत करें।

जब आप एक मसीही बने, उस समय परमेश्वर ने आपके जीवन में अनेकों तरीकों द्वारा, शायद किसी ईश्वरीय स्त्री या पुरूष के प्रभाव या प्रोत्साहन द्वारा कार्य किया हो। आपने अपनी बुद्धि व अनुभवों में बढने पर ,एक मार्गदर्शक की भूमिका को अदा करना प्रारम्भ कर दिया, जिसके तहत आपने नये विश्वासियों की उनके विश्वास में बढ़ने में मदद की। अधिकतर शिष्यता का यह सम्बन्ध अपने से आयु तथा आत्मिक परिपक्वता से में छोटे व्यक्ति के साथ ही स्थापित होता है। आपके द्वारा विश्वास योग्यता, लगन और बुद्धिमानी के साथ काम करने पर आपके चर्च के लोग व आपसे मार्गदर्शन पाने वाले लोगों ने पहिचान लिया कि आप एक छोटे समूह संचालन करने के योग्य व्यक्ति है। यह बढ़ें आदर की बात व एक सुनहरा अवसर है! लेकिन, यदि आपका छोटा समूह अलग अलग आत्मिक स्तर के लोगों से मिलकर बना है तो आपको यह निर्धारित करने में दिक्कत हो सकती है कि आप अपने समूह की किस प्रकार अगुवाई करेंगे। और हो सकता है कि कोई इस परिस्थिति के कारण कहने लगे"नहीं! मैं इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं हूँ" जो कि सत्य नहीं है। यह उस कार्य को अस्वीकार करना है जो यीशु मसीह आपके जीवन में करना चाहता है और यह पवित्र आत्मा के उस कार्य क्षमता पर विश्वास में कमी को दर्शाता है जो आपको उस ज़िम्मेदारी के योग्य बना सकता है। और हो सकता है कि कोई अगुवाई को यह कहते हुए बढ़े घमण्ड के साथ स्वीकार करे ''हां मैं ही तुम्हारा अगुवा हूँ। मैं तुम्हें सिखाऊँगा और तुम मेरी बातों को सुनोगे। "निश्चय ही यह व्यक्ति "अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनने वाला है" और यह स्वभाव उसे अगुवा होने के लिए अयोग्य ठहराता है।

नम्रता और क्रोध के बीच में क्या अन्तर है जिसके द्वारा एक व्यक्ति किसी समूह की बेहतर ढंग से अगुवाई कर सकता है? याद रखने वाले कुछ तत्व निम्नलिखित है।

प्रथमः मसीह के द्वारा प्रदान किये गये अधिकार का हिम्मत के साथ इस्तेमाल करें(जिसे कलीसिया ने आपके भीतर देखा हो)। यदि परमेश्वर ने आपको इस काम के लिए बुलाया है, तो लोगों के सामने परमेश्वर की सामर्थ में होकर उस अधिकार में खड़े होने से बिल्कुल न डरें। अपने समूह के व्यस्क लोगों के साथ उनके बराबर व्यक्ति के रूप में बात करें, परन्तु ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे अगुवाई करने के लिए चुना गया हो। हो सकता है कि आप वास्तव में अपने समूह के कुछ लोगों से आयु में छोटे हों, लेकिन फिर भी मसीह में आपकी आयु उनकी मसीह में आयु से ज्यादा हो सकती है, या आपके पास उनकी तुलना में अधिका बाइबल का ज्ञान हो सकता है या आपके पास उनकी तुलना में बेहतर शिक्षा देने का वरदान हो सकता है। पौलुस ने तीमुथीयुस को यह सलाह दी, जो उस समय ऐसी ही परिस्थिति में था ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वच, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा(1 तीमुथीयुस 4:12)। समूह के लोगों की आयु की परवाह न करते हुए परमेश्वर द्वारा आपको प्रदान किये गये तथा कलीसिया द्वारा स्वीकृत अधिकार के तहत उनकी अगुवाई करें ,परन्तु उन पर गुस्सा या क्रोध न करें। आपको '' परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो आपके बीच में है रखवाली करने के बुलाया गया है लेकिन दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिए नहीं, पर मन लगाकर। और जो लोग आपको सौंपे गये हैं, उन पर अधिकार न जताआ, वरन झुण्ड के लिए आदर्श बनो। (1 पतरस 5:2–3)

दूसराः अपनी "स्थिति" या "अनुभव" की परवाह न करते हुए, जैसा वचन में बताया गया है सभी उम्र के लोगों के साथ आदर के साथ व्यवहार करें। चाहें आप अपने समूह के किसी बुजुर्ग व्यक्ति की तुलना में कितने भी पढ़े या प्रशिक्षित हो मगर आप उनके साथ हमेशा

आदर के साथ बातचीत करें। और चाहें आप दूसरों की तुलना में कितने भी आयु में तथा आत्मिक परिपक्वता में छोटे हों आप न तो उनके सामने झुके और न उनकी हिमायत करें। पौलुस ने तीमुथीयुस को सुझाव दिया "किसी बूढ़े को न डांट; पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर, और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर समझा दे। यह निश्चय ही आपके लिए भी एक उत्तम सलाह है।

तीसराः परमेश्वर से प्रार्थना में काम करने की उन योग्यताओं को मांगे जो परमेश्वर ने आपके लिए तैयार की हैं। याद रखें, इस ऊँचे पद को आपने अपने कामों से हासिल नहीं किया है। यह तो परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा थी कि आप अगुवाई करें। इफिसियो 2:10 हमें बताता है कि,"क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गये जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया है।'' उनसे आपको इन भले कामों को करने के लिए बुलाया है, अतः आपको उसकी सामर्थ में होकर उन भले कामों को करना चाहिए। और यदि आपके जीवन में कोई ऐसा दिन आता है जब आपको ऐसा लगे कि आप इस काम के लिए उपयुक्त जन नहीं है, तब जरूर से 1 थिस्लुनिकियों 5:24 में पायी जाने वाली स्वतन्त्रता को याद करें " तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा। " उसने आपको बुलाया है। वह ही उपाय करेगा।

परमेश्वर से प्रार्थना में काम करने की उन योग्यताओं को मांगे जो परमेश्वर ने आपके लिए तैयार की हैं। याद रखें, इस ऊँचे पद को आपने अपने कामों से हासिल नहीं किया है। यह तो परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा थी कि आप अगुवाई करें।

अन्ततः – आपको चाहे अपने भीतर यह सोचकर कितना भी अच्छा महसूस हो कि परमेश्वर ने मुझे अगुवाई करने का अवसर प्रदान किया है, लेकिन हमेशा याद रखें परमेश्वर बलवानों को नहीं परन्तु निर्बलों को बुलाता है। 1 कुरिन्थियों 1:26–31 स्पष्ट रूप में हमें बताता है कि हमें क्यों बुलाया गया है, और हमें इस्तेमाल करने के पीछे उसका क्या मकसद है। पॉलुस लिखता है "हे भाइयो, अपने बुलाए जान को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर के जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञानवालों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छा को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हे जो हैं, व्यर्थ ठहराए। ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए। परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म और पवित्रता और छुटकारा। ताकि जैसा लिखा है कि'' जो कोई घमण्ड करे, वह केवल परमेश्वर पर घमण्ड करे।''

और इन सारी बातों के द्वारा हमारे जीवन में लज्जा के कारण निराशा नहीं परन्तु बड़ा विश्राम उत्पन्न होना चाहिए। आप अगुवाई की जिम्मेदारी उठाने के बाद 'सिद्ध होने' या 'सब कुछ जानने' के बोझ को स्वतन्त्र किये जाने के एहसास को महसूस कर सकते हो। आप 'बुद्धिमान' होने के कारण नहीं बुलाये गये थे। बल्कि आप मसीह की बुद्धिमानी के कारण बुलाये गये थे और वह आपके द्वारा, जो अपनी अगुवाई में उसकी अगुवाई को स्वीकार करते हैं, अपनी महानता को प्रगट करेगा।

सुर्खियां

- मसीही जीवन से हमेशा अनुग्रह, नम्रता और तरस की उम्मीद की जाती है। अतः मसीही अगुवों में इन तत्वों का अधिकाई से होना बहुत जरूरी है।

- यह ध्यान रखते हुए कि परमेश्वर बुलाता है, तैयार करता है और आपको महिमा देता है, आप अपनी असुरक्षा और धमण्ड का मूल्यांकन कर सकते हैं। आप केवल परमेश्वर के हाथों में एक औज़ार है।

- एक अगुवे को उम्र या आत्मिक परिपक्वता की परवाह न करते हुए समूह के सभी सदस्यों के साथ बड़े आदर के साथ व्यवहार करना चाहिए। अगुवे के जीवन में समझौते या खारिज करने वाले स्वभाव के लिए कोई स्थान नहीं है।

- जिस परमेश्वर ने आपको बुलाया है वह विश्वासयोग्य है, और वह ही कामों को पूरा करेगा।

अब आप बताएं

- क्या आप किसी ऐसे समूह को जानते हैं जो अपने समूह में पाये जाने वाले विभिन्न आयु के लागों के साथ आदरपूर्ण ढंग से बर्ताव नहीं करता? समूह का सदस्य होने के नाते आपको कैसा महसूस होता है? जिन शिक्षा देने के तरीको को दूसरों के जीवन में देखा है आप उनसे बचने के लिए क्या करने की कोशिश कर सकते हैं?

- अपने छोटे समूह में शिक्षा देते समय कौन कौन सी बातें आपकी मदद करेंगे? यदि आपको लगता है कि आपके जीवन में किसी सम्भावित पाप का खतना मण्डरा रहा है(चाहे विश्वास के अभाव की असुरक्षा हो या चाहे धमण्ड से भरा अति आत्मविश्वास), परमेश्वर से प्रार्थना करने का समय निकालें कि परमेश्वर और उस समस्या से छुटकारा दे, और आपको उस उसे पार पाने के लिए जिन चीजों की जरूरत हो उसे प्रदान करे।

- अपने समूह के लोगों में से एक एक व्यक्ति का नाम ले ले कर प्रार्थना करें, और परमेश्वर से उन सभी को बेहतर ढंग से शिक्षा देने के लिए बुद्धि, और यदि आपने शिक्षा देते समय किसी व्यक्ति को चोट पहुँचाई हो तो परमेश्वर से उसे आपके सामने लाने के लिए प्रार्थना करें। रिश्तों में उत्पन्न किसी भी प्रकार की चोट को भरने का प्रयास करें, तथा अनुग्रह को अपना पूरा काम करने दें।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing